

7-4-21

कठुलाय शरण परावर्णी

का आवलोकना विभा गपा। सुखवाद

सं 60 इतवान इतरिफे वनाग इति

इमात् आदि ० मे प्रायसिग डिमी

जाती चे इमी ही अत परावर्णी

इती स्तर पर सद्य को जाती ही

परावर्णी प्राप्ति एक खदि प्रकृषा

जाती ही परावर्णी बल उमर

से एक अंग दक्षिण उमर हो

